Toppersnotes
Unleash the topper in you

# राजस्थान स्टेनोग्राफर

# RAJ. STENOGRAPHER

राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग (RSSB)

भाग – 2

## हिंदी एवं विज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

# सामान्य हिन्दी

## (व्याकरण)


1. वर्ण विचार 1
2. संज्ञा 5
3. सर्वनाम 6
4. विशेषण 8
5. क्रिया 11
6. काल 12
7. विराम चिह्न 15
8. संधि 18
9. समास 24
10. उपसर्ग 28
11. प्रत्यय 32
12. तत्सम-तद्भव 35


## (शब्दावली)


13. पर्यायवाची 37
14. विलोम-शब्द 48
15. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द 54


## (वाक्य विन्यास)


16. शब्द शुद्धि 59
17. वाक्य-शुद्धि 60
18. शुद्ध वाक्य 63

19. मुहावरे 70
20. लोकोक्ति 81
21. पत्र लेखन 95

# सामान्य विज्ञान

## (भौतिक विज्ञान)

1. भौतिक राशियां 98
2. गति 99
3. बल एवं न्यूटन के गति विषयक नियम 103
4. कार्य, शक्ति एवं ऊर्जा 106
5. गुरूत्वाकर्षण 107
6. आवर्त गति एवं तरंग 108
7. ऊष्मा एवं प्रसार 113
8. विद्युत धारा एवं चुम्बकत्व 119
9. प्रकाश एवं लेन्स 122
10. दाब 129
11. पृष्ठ तनाव एवं मशीन 132

## (जीव विज्ञान)

1. सामान्य परिचय 135
2. कोशिका विज्ञान 138
3. ऊतक 140
4. पाचन तंत्र 141
5. पोषण 143
6. रक्त 144
7. हार्मोन 148

8. कंकाल तंत्र 151
9. उत्सर्जन तंत्र 153
10. श्वसन तंत्र 156
11. तंत्रिका तंत्र 158
12. मनव रोग 159
13. आनुवांशिकी एवं मेण्डलवाद 162

## (रसायन विज्ञान)

1. द्रव्य 165
2. परमाणु संरचना 169
3. रासायनिक अभिक्रियाएं एवं रासायनिक समीकरण 179
4. अम्ल, क्षार एवं लवण 180
5. विलयन 182
6. धातु एवं अधातु 185
7. pH स्केल 194
8. मानव जीवन में रसायन 195

# वर्ण विचार

भाषाः- भाषा मनुष्य की अभिव्यक्ति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं व्यापक माध्यम है। वाचिक माध्यम से आशय है - वाणी का माध्यम। वाणी वक्ता के मुँह से ध्वनियों के रूप में व्यक्त होती है किंतु यदि वह ध्वनियों के रूप में व्यक्त न भी हो और वक्ता के मानस में विचार के रूप में ही घुमडती रहे, तो भी वह भाषा ही है। इस प्रकार भाषा वह वाचिक व्यवस्था है, जो मौन रूप में तो विचार/भाव (Deep Structure) का रूप लिए होती है और मुँह से व्यक्त होकर ध्वनि रूप में भौतिक रूप (Surface Structure) ग्रहण करती है।

## वर्ण, शब्द और वाक्य

भाषा-शरीर की सबसे छोटी इकाई वर्ण है, किंतु अर्थ के स्तर पर लघुतम इकाई शब्द है। क्, च् , अ आदि वर्ण है पर इनका कोई अर्थ नहीं, किंतु कमल, चम्मच और अंतर शब्दों में ये वर्ण ही अन्य वर्णो के संयोग से ऐसे वर्ण या वर्ण-समूह ही शब्द कहलाते है। आ (आने के अर्थ में-आदेश) तथा कमल (क् अ म् अ ल् अ) क्रमशः एक तथा छह वर्ण है, और दोनों ही अर्थवान है, इसलिए ये दोनों ही शब्द है।

किंतु शब्द भी कोई मंतव्य प्रकट नहीं कर पाता जब तक कि वह वाक्य में प्रयुक्त नहीं हो जाता। कमल कह देने से कोई आशय नहीं निकलता, यह एक फूल भी हो सकता है या किसी का नाम भी। इतना ही नहीं केवल कमल कह देने से कोई मंतव्य भी प्रकट नहीं होता, अतः अर्थ/मंतव्य के स्तर पर शब्द भी भाषा की पूर्ण इकाई नहीं है, पूर्ण इकाई तो वाक्य ही है, जैसे -कमल खिल रहा है, कमल पढ रहा है या पास में बैठे कमल नामक व्यक्ति को कहा जाए कि कमल! (सुनो)। यहाँ यह वाक्य एक ही शब्द कमल! (सुनो) से बना है। यह है तो एक ही शब्द लेकिन यह वाक्य भी है, क्योंकि यहाँ एक ही शब्द 'कमल सुनो' वाक्य का प्रतिनिधित्व कर रहा है और वक्ता का मंतव्य प्रकट कर रहा है। इस प्रकार जैसे केवल एक ही वर्ण शब्द का रूप ले सकता है (जैसे - 'आ' - आने के अर्थ में), वैसे ही केवल एक ही शब्द भी वाक्य का रूप भी ले सकता है।

इस प्रकार वर्ण भाषा की लघुतम और वाक्य भाषा की पूर्ण इकाई है तथा एक वर्ण आ अपनी भूमिका के आधार पर एक वर्ण, एक शब्द या एक वाक्य- किसी का भी रूप ले सकता है।

### वर्णो के भेद

हिंदी में वर्ण चार प्रकार के है:- स्वर, व्यंजन, अनुस्वार और विसर्ग

## स्वर (Vowel)

स्वरः- वे वर्ण स्वर कहलाते है, जिनके उच्चारण में हवा फेफडों से उठकर मुँह में बिना किसी बाधा के, निरंतर रूप से, मुँह या नाक के द्वारा बाहर निकल जाती है। अर्थात् जीभ, होंठ, गला आदि परस्पर कहीं स्पर्श नहीं करते।

हिंदी में- अ, आ, ऑ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ 11 स्वर है।

संस्कृत का ऋ स्वर पालि भाषा के समय से ही, अर्थात् 2000 वर्ष पूर्व से ही, स्वर के रूप में उच्चरित नहीं हो रहा है, यह र व्यंजन की तरह बोला जाता है। दरअसल संस्कृत के ऋ स्वर का उच्चारण हिंदी में रि (र + इ) अर्थात् र व्यंजन और इ स्वर हो गया है। लिखने की परंपरा के कारण यह संस्कृत से आए हुए तत्सम शब्दों-ऋषि, कृपा, पृथ्वी आदि में अवश्य लिखा जाता है किन्तु इसका उच्चारण तो रि ही है।

स्वरों के भेद- स्वरों के दो आधार पर भेद किए जाते है- (क) प्रयत्न और (ख) उच्चारण स्थान- मुखाकृति, ओष्ठाकृति, उच्चारण-समय आदि प्रयत्न के प्रकार है तथा उच्चारण-स्थान अपने-आपमें एक स्वतंत्र आधार है। हिंदी स्वरों के उच्चारण में मुख में जिह्वा की स्थिति को इस रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है-




(क) प्रयत्न-विधि के आधार पर भेद

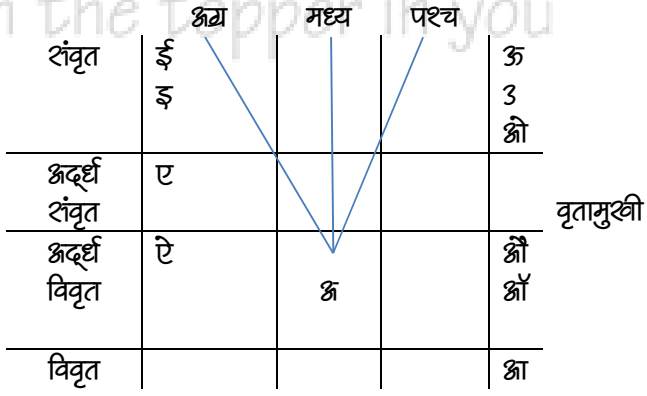

1. मुख में जिह्वा की स्थिति के आधार पर

(1) अग्रस्वर-इन स्वर ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मुँह के आगे की ओर जाती है; जैसे- इ, ई, ए, ऐ।

(2) मध्य स्वर- इस स्वर के उच्चारण में जिह्वा मुँह के मध्य भाग में रहती है, हिंदी में केवल एक ही मध्य स्वर है - अ।

(3) पश्च स्वर– इन स्वर के उच्चारण में जिह्वा मुँह के पीछेवाले भाग में रहती है, जैसे– आ, ऑ, उ, ऊ, ओ, औ।

2. ओष्ठाकृति के आधार पर

(1) वृत्तामुखी स्वर– इन स्वर के उच्चारण में होठों का आकार गोल हो जाता है; जैसे– ऑ, उ, ऊ, ओ, औ।

(2) अवृत्तामुखी स्वर– इन स्वर के उच्चारण में होठ गोल नहीं होते हैं; जैसे– अ, आ, इ, ई, ए, ऐ।

3. मुखाकृति के आधार पर

(1) संवृत स्वर– जब जिह्वा का व्यवहृत भाव स्वरों के उच्चारण के लिए मुख में अधिकतम ऊँचाई पर होता है तथा मुख संवृत (बंद) हो जाता है, ऊपर और नीचे के दाँत पास-पास आ जाते हैं; ऐसी स्थिति में उच्चरित होनेवाले संवृत स्वर हैं– इ, ई, उ, ऊ

(2) अर्द्ध संवृत स्वर– उच्चारण के समय जब जिह्वा की ऊँचाई संवृत की तुलना में कम रहती है तथा ऊपर और नीचे के दाँत थोडे दूर होते हैं, खुलते है अर्थात् आधे ही बंद रहते हैं तब अर्द्ध संवृत स्वर उच्चारित होते हैं; ये स्वर हैं– ए, ओ।

(3) विवृत स्वर– विवृत का अर्थ है खुला हुआ। जब मुख सर्वाधिक खुला हुआ होता है तब विवृत स्वर का उच्चारण होता है; यथा– आ।

(4) अर्द्ध विवृत स्वर– जब मुख विवृत स्वर (आ) से कम खुला हुआ तथा अर्द्ध संवृत (आधा बंद) से अधिक खुला होता है तब अर्द्ध विवृत स्वरों का उच्चारण होता है; जैसे– अ, ऑ, ऐ, औ

उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर

1. ह्रस्व स्वर– जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है; जैसे– अ, इ, उ।

2. दीर्घ स्वर– जिनके उच्चारण में अधिक समय लगता है, ह्रस्व स्वर से दुगुना समय लगता है; जैसे– आ, ऑ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(1) वस्तुतः दीर्घ स्वर ह्रस्व स्वरों के दीर्घ रूप नहीं होते वरन् ये स्वतंत्र स्वर हैं। इनके उच्चारण प्रयत्न तथा जिह्वा के व्यवहृत भाग की दृष्टि से भी इनमें अंतर है।

(2) 'ऐ' तथा 'औ' स्वर-ध्वनियों; जैसे-बैल, छैल, कौन, मौन आदि का प्रयोग हिंदी में मूल स्वर के रूप में होता है, संयुक्त स्वर के रूप में नही। मानक हिंदी में सभी ग्यारह स्वर मूल स्वर हैं, संयुक्त एक भी नहीं है किंतु बिहारी एवं पूर्वी हिंदी की बोलियों में ये संयुक्त स्वर (ऐ-अ + ए, औ - अ + ओ) की तरह बोले जाते हैं।

(3) प्लुत स्वर– जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्राओं से भी अधिक का समय लगता है, जैसे–'ओम्' में ओ को अधिक खींचने पर 'ओऽम्' बोला जाता है। प्लुत स्वर संस्कृत में उच्चारित होता रहा है, यह हिंदी का स्वर नहीं है।

(ख) उच्चारण स्थान के आधार पर भेद

तालव्य – इ ई (जीभ के तालु के पास जाने से उच्चरित)

तालुकंठ्य (कंठ-तालु)– ए ऐ (जीभ तालु पर, ध्वनि कंठ में)

कोमल तालव्य/कंठ्य – अ आ ऑ

संस्कृत में अ आ कंठ में बोले जाते थे इसलिए कंठ्य माने गए हैं किंतु हिंदी में अब ये कंठ से ऊपर कोमल तालु स्थान से बोले जाने के कारण कोमल तालव्य हो गए हैं।

ओष्ठ्य– उ ऊ (दोनों होठों के गोल होने से, वहीं से उच्चारित)

ओष्ठ-कंठ्य– ओ औ (होंठ तो गोल किंतु कंठ से)

स्वरों की उक्त विशेषताओं को नीचे की तालिका में भी प्रस्तुत किया गया है–

विसर्ग – यह मूलतः संस्कृत भाषा की ध्वनि है। हिंदी के तत्सम शब्दों (प्रातः काल, दुःख) में विसर्ग का व्यवहार होता है। विसर्ग का उच्चारण ह् जैसा होता है किंतु संस्कृत में यह ह् से भिन्न ध्वनि रही है। ह घोष व्यंजन है जबकि विसर्ग (:) अघोष ध्वनि है। ह और विसर्ग का उच्चारण-स्थान काकल होने के कारण विसर्ग की ध्वनि ह-जैसी ही हो गई है और संस्कृत काल में रहनेवाला सूक्ष्म भेद अब कम रह गया है।

## व्यंजन (Consonant)

व्यंजन– व्यंजन के उच्चारण में स्वर की सहायता ली जाती है। व्यंजन -ध्वनि अवरोध के हटने ही उच्चरित होती है ज्यों ही अवरोध हटता है तो कुछ-न-कुछ स्वर की ध्वनि आ ही जाती है।

### व्यंजनों का वर्गीकरण

व्यंजनों का वर्गीकरण मुख्यतः दो आधारों पर किया जाता है–

क– प्रयत्न (स्पर्शी / संघर्षी, घोष /अघोष, अल्पप्राण / महाप्राण, अनुनासिक / निरनुनासिक प्रकंपन, उत्क्षेप, ईषत् अवरोध आदि)

ख– उच्चारण स्थान

(क) प्रयत्न-विधि के आधार पर वर्गीकरण

व्यंजनों के वर्गीकरण का पहला आधार प्रयत्न विधि है जिसके अनुसार फेफड़ों से निकलनेवाली वायु मुख विवर में कहीं रूक जाती है, कही रगड खाती है, कही नाक से निकलती है।

(1) स्पर्श्य (Stop) व्यंजन- जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ का दाँत, वर्त्स, तालु, मूर्धा या दोनों होठों अथवा गले की आंतरिक चमडी से स्पर्श होता है तथा कुछ रूकावट के बाद ध्वनि का स्फोट होता है और श्वास बाहर निकल जाती है, स्पर्श्य व्यंजन कहे जाते है। हिंदी में क वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग एवं प वर्ग के 20 स्पर्श्य व्यंजन कह जाते है। संस्कृत में च वर्ग अब स्पर्श-संघर्षी बन गया है।

(2) स्पर्श संघर्षी (Affricate):- च वर्ग के बोलने में साँस स्पर्श के साथ-साथ कुछ घर्षण के साथ निकलती है इसलिए च्, छ्, ज्, झ्, ञ् को स्पर्श संघर्षी माना गया है।

(3) संघर्षी (Fricative) व्यंजन - श्, ष्, स्, ह् के उच्चारण में मुख-अंगों के परस्पर निकट आने से वायु-मार्ग संकीर्ण हो जाता है तथा हवा घर्षण (संघर्ष) के साथ निकलती है, इसलिए इन्हे संघर्षी व्यंजन कहा जाता है।

(4) उत्क्षिप्त (Flapped) व्यंजन- ड एवं ढ व्यंजन का उच्चारण जीभ की नोक को उलट मूर्धा को झटके के साथ कुछ दूर तक छूकर किया जाता है, इसलिए इन्हें उत्क्षिप्त (जीभ के ऊपर उछलने से उत्पन्न) या द्विस्पृष्ट (जीभ के दो बार स्पर्श करने से उत्पन्न) अथवा ताडनजात (जीभ के मूर्धा पर मारने से उत्पन्न) व्यंजन भी कहते है।

(5) लुंठित/प्रकंपित (Trilled) व्यंजन- क्योंकि र् के उच्चारण में जीभ लुढकती सी जीभ को कंपित करती है, इसलिए र् को लुंठित/प्रकंपित व्यंजन कहा जाता है। र् का ही महाप्राण रूप र्ह विकसित हुआ है। (वह इस कमरे में रहता है)

(6) अर्द्धस्वर / अंतःस्थ / ईषत् स्पर्श्य (Non-Fricative) व्यंजन- य् व् के उच्चारण में मुँह में क्रमशः जीभ-तालु तथा ओठों का स्पर्श कम होता है इसलिए इन्हे ईषत् (तनिक) स्पर्श्य व्यंजन कहते है। य् तथा व् का उच्चारण अवरोध की दृष्टि से स्वर एवं व्यंजन के बीच का है, अतः इन्हे अर्द्धस्वर (आधे स्वर-आधे व्यंजन) या अंतःस्थ (अवरोध की दृष्टि से स्वर एवं व्यंजन के बीच में स्थित, न पूरे व्यंजन न पूरे स्वर) (Semi-Vowel) व्यंजन भी कहा जाता है।

(7) पार्श्विक (Lateral) व्यंजन- ल् के उच्चारण में साँस जीभ के दोनों पार्श्व से निकलती है इसलिए यह पार्श्विक व्यंजन कहलाता है।

(8) अल्पप्राण (Non-aspirated) एवं महाप्राण (Aspirated) व्यंजन- जिन व्यंजनों के उच्चारण में साँस की मात्रा कम लगानी पडती है उन्हे अल्पप्राण कहते है। वर्गो के दूसरे तथा चौथे व्यंजनों (ख्, घ्, छ्, झ्, ठ्, ढ्, फ्, भ्, आदि) को छोडकर शेष व्यंजन अल्पप्राण है।

(9) घोष एवं अघोष व्यंजन- जिन व्यंजनों के उच्चारण में हवा के गले से निकलने पर स्वरतंत्रियों में कंपन पैदा होता है उन व्यंजनों को घोष कहा जाता है और जिनके उच्चारण में यह कंपन नहीं होता उन्हे अघोष कहा जाता है।

(10) नासिक्य (Nasal)- ङ्, ञ्, ण्, न्, म् व्यंजनों के उच्चारण में हवा नाक से निकलती है इसलिए इन्हे नासिक्य अथवा अनुनासिक व्यंजन कहते है।

(ख) उच्चारण स्थान के आधार पर वर्गीरण

व्यंजन ध्वनियों का उच्चारण करते समय हमारी प्राण वायु किसी-न-किसी मुख अवयव से टकराती है। उस अवयव को व्यंजन का उच्चारण स्थान कहा जाता है।

(1) कोमल तालव्य (कंठ्य व्यंजन)- क्,ख्, ग्, घ्, ङ् हिंदी में कोमल तालव्य व्यंजन है क्योंकि इनका उच्चारण स्थान कोमलतालु (कंठ से ऊपर का स्थान)

(2) काकल्य/अलिजिह्वीय- ह और विसर्ग (:) कंठ के थोडा नीचे काकल/अलिजिह्वा के स्थान (छोटी जीभ) से बोले जाते है, इसलिए इन्हे काकल्य या अलिजिह्वीय कहा जाता है।

(3) ओष्ठ्य व्यंजन- प्, फ्, ब्, भ्, म्, म्ह, व् व्यंजन दोनों ओठों को मिलाने पर बोले जाते है, इसलिए इन्हें ओष्ठ्य कहा जाता है।

(4) दंत्य व्यंजन- त्, थ्, द्, ध्, दंत्य व्यंजन है जो जीभ की ऊपर की नोक द्वारा ऊपर के दाँतों का स्पर्श करने से उच्चरित होते है।

(5) दंतोष्ठ्य- फ, व व्यंजन ऊपर के दाँत एवं नीचे के मिलने से उच्चरित होते है। फ व्यंजन फारसी और अंग्रेजी के शब्दों में तथा व व्यंजन अंग्रेजी के शब्दों में प्रयुक्त होता है। फेल, फायदा, वैल्यू (Value) आदि शब्दों के प्रारंभ में ये व्यंजन है। अंग्रेजी के V वाले व्यंजनों का उच्चारण व (ओष्ठ्य) होता है तथा ट वाले व्यंजन का उच्चारण व (दंतोष्ठ्य) होता है। यद्यपि भारत सरकार द्वारा स्वीकृत देवनागरी लिपि के मानक रूप में व व्यंजन को अलग से लिपि-चिह्न के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है। किंतु हम अंग्रेजी के ट वाले व्यंजनों को व (ओष्ठ्य) न बोलकर दृव (दंतोष्ठ्य-ऊपर के दाँत और नीचे के होठ से) बोलते है और सही उच्चारण की दृष्टि से बोलना भी चाहिए। सही उच्चारण और सही लेखन की दृष्टि से .व को व से अलग रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

(6) वर्त्स्य व्यंजनः- न्, न्ह्, र्, र्ह्, ल्, ल्ह्, स् व्यंजन वर्त्स्य हैं। ऊपर के दाँतों से थोडा ऊपर मसूड़ों (वर्त्स) के साथ जीभ के स्पर्श से ये व्यंजन बोले जाते हैं। संस्कृत में न्, ल् एवं स् का उच्चारण स्थान दंत्य था किंतु हिंदी में इनका उच्चारण स्थान दाँतों से ऊपर वर्त्स स्थान है। इसलिए इन्हे वर्त्स्य में सम्मिलित किया गया है। न का महाप्राण न्ह है जो कन्हैया, कान्हा आदि शब्दों में उच्चारित होता है।

(7) तालु-वर्त्स्य (तालव्य) व्यंजन- हिंदी में र् व्यंजन कहीं पर वर्त्स्य है; जैसे- रमण, रत्न, किंतु रोटी, रौद्र में मूर्धन्य है। यह आगे के वर्ण के उच्चारण स्थान के अनुसार उच्चरित होता है।

(8) तालव्य व्यंजन- य्, श् तालव्य व्यंजन है क्योकि ये जीभ के कठोर तालु भाग (वर्त्स/मसूडा एवं मूर्धा के बीच का भाग) के स्पर्श करने से उच्चरित होते है।

(9) मूर्धन्य व्यंजन- ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, ड, ढ, र्, र्ह्, ष् मूर्धन्य व्यंजन है तथा इनका उच्चारण जीभ के अग्र भाग द्वारा मूर्धा (तालु का बीचवाला ऊपर का कठोर भाग) को स्पर्श करने से होता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

# संज्ञा

**परिभाषा :-**

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ है- 'सम् + ज्ञा' अर्थात् सम्यक् ज्ञान कराने वाला अतः किसी भी वस्तु, व्यक्ति, स्थान, वर्ग, भाव स्थिति आदि का परिचय कराने वाले शब्द को संज्ञा कहते है । संज्ञा का पर्याय है- नाम । किसी व्यक्ति (प्राणी), वस्तु स्थान, स्थिति, वर्ग, भाव, विचार के नाम को संज्ञा कहते है ।

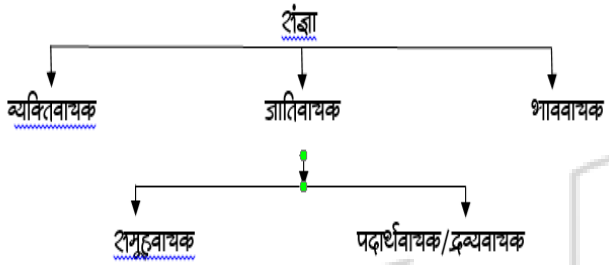


**संज्ञा के भेद:-**

व्यक्ति, गुण, वस्तु, भाव, स्थान आदि के आधार पर संज्ञा के तीन भेद माने गऐ है -

### 1.व्यक्तिवाचक संज्ञा:-

जो शब्द किसी व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष या वस्तु विशेष का बोध कराते है ,उन्हे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते है । जैसे - गौतम बुद्ध, हिमालय, ताजमहल, सीता, गंगा, जयपुर, रामायण आदि । व्यक्तिवाचक संज्ञा की विशेषता यह है कि (1) यह दुनिया मे एक ही होती है और (2) इसको हम पहले से जानने के आधार पर ही पहचान सकते है । गंगा/ताजमहल/रामायण को यदि हमने पहले से देखा है, समझा है तभी हम पहचान सकते है कि यह नदी तो गंगा है, यह भवन ताजमहल है, यह पुस्तक रामायण है, अचानक पहली बार देखने से नही ।

### 2. जातिवाचक संज्ञा :-

जो शब्द किसी प्राणी, पदार्थ या समुदाय की पूरी जाति/वर्ग (Class) का बोध कराता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते है, जैसे- लडका, पर्वत, पुस्तक, घर, नगर, झरना, कुत्ता आदि ।

जातिवाचक संज्ञा तो एक वर्ग है और दुनिया मे उसकी इकाईयाँ अनेक होती है । लडका जातिवाचक संज्ञा है और दुनिया मे लडका वर्ग के अनेक विद्यमान है । जातिवाचक संज्ञा का आधार है- वस्तु आदि का समान गुण, और पहले से उन वर्ग गुणों का ज्ञान होने पर वैसे ही गुण अन्य किसी मे पहचान कर नई वस्तु/प्राणी को भी हम तुरन्त पहचान लेते है ।

प्रश्न:- नीचे लिखे शब्दों को व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञा के रूप मे छांटिऐ-
ब्रह्मपुत्र, पत्थर, संगमरमर, ग्रेनाइट, फूल, कमल, हिमालय, अनाज, गेहूँ, कल्याणसोना (गेहूँ),
गाय, जर्सी गाय, फल आम, लँगडा आम ।

उत्तर:- ऊपर के शब्दों मे केवल ब्रह्मपुत्र और हिमालय व्यक्तिवाचक संज्ञाऐं है शेष सभी जातिवाचक है दुनिया मे व्यक्तिवाचक संज्ञा केवल एक होती है और जातिवाचक-अनेक ।

### 1. द्रव्यवाचक :-

किसी पदार्थ या द्रव्य (द्रव यानी बहने वाली वस्तु-पानी, तेल, आदि, द्रव्य यानी पदार्थ जैसे- मिट्टी, चीनी, तेल आदि) का बोध कराने वाला शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते है, जैसे- लोहा, सोना, घी, मिट्टी, तेल, दूध, लकडी, ऊन आदि ।
इन संज्ञाओं हम गिन नही सकते । दो लोहा, चार सोना आदि नही कर सकते, ये अगणनीय संज्ञाऐं है और ये मात्रात्मक या परिमाणात्मक है । इनमें से कुछ बहुवचन बनते है जैसे- मिट्टी,- मिट्टियाँ, लकडी-लकडियाँ आदि ।

### 2. समूहवाचक :-

ये संज्ञाऐं अनेक गणनीय संज्ञाओं के समूह से बनती है, और वे एकवचन एवं बहुवचन दोनो रूपों मे (सेना/सेनाऐं,/कक्षा/कक्षाऐं) प्रयुक्त हो सकती है । ये शब्द किसी व्यक्ति के वाचक न होकर समूह या समुदाय के वाचक होते है, जैसे- सेना, कक्षा, मंडली, जुलूस, परिवार, पुस्तकालय आदि ।

### 3. भाववाचक संज्ञा :-

जिन शब्दों से व्यक्तियों/पदार्थो के धर्म (Nature), गुण, दोष अवस्था (State), व्यापार (Activity), भाव स्वभाव या अवधारणा (Concept), विचार आदि का बोध होता है, वे भाववाचक संज्ञाऐं कहलाती है, जैसे कोमलता, बचपन, लम्बाई, बुढापा, शत्रुता, सलाह, मातृत्व, औचित्य, दासता, मित्रता आदि ।

**भाववाचक संज्ञाएँ पाँच प्रकार के शब्दों से बनती है :-**

1. जातिवाचक संज्ञा से (विभिन्न तद्धित प्रत्यय लगाकर)–
लडका–लडकपन, मित्र–मित्रता, पशु–पशुता, आदमी–आदमीयत, चिकित्सक–चिकित्सा, चोर–चोरी, तरूण–तरूणाई, पुरूष–पुरूषत्व, मर्द–मर्दानगी आदि ।

2. सर्वनाम से (विभिन्न तद्धित प्रत्यय लगाकर)–
निज–निजत्व, अपना–अपनापन, सर्व–सर्वस्व, अहम्–अंहकार, मम्–ममता, ममत्व आदि ।

3. विशेषण से (विभिन्न तद्धित प्रत्यय लगाकर)–
बूढा–बुढापा, चतुर–चतुरता/चतुराई, मीठा–मिठास, मधुर–मधुरता/माधुर्य, खट्टा–खटास/खट्टापन, अरूण–अरूणिमा, कंजूस–कंजूसी, उचित–औचित्य, लघु–लघुता, आलसी–आलस्य, विद्वान–विद्वता गरीब–गरीबी, भूखा–भूख, परिष्कार, धीर–धैर्य/धीरज आदि ।

4. क्रिया से संज्ञा – (विभिन्न कृत प्रत्यक्ष लगाकर)–
चढना–चढाई, चलना–चाल, दौडना–दौड, सजाना–सजावट, उतारना–उतार, कमाना–कमाई, गाना–गान, जीना–जीवन, झुकना–झुकाव, खेलना–खेल, थकना–थकान, पहुंचना–पहुंच, जीतना–जीत, मिलाना–मिलावट, हँसना–हँसी, पीना–पान आदि ।

5. <u>अव्यय से –</u> निकट–निकटता, दूर– दूरी, नीचे–नीचता, ऊपर–ऊपरी, धिक्–धिक्कार आदि ।
इस प्रकार ता, त्व, पन, ई, आई, आ, इयत, आहट, त, य आदि प्रत्यय लगाने से अन्य शब्द भाववाचक संज्ञाओं मे परिवर्तित हो जाते है । हिन्दी मे संज्ञाऐं लिंग, वचन तथा कारक द्वारा अपना रूप निर्धारण करती है । ये संज्ञा के विकारक तत्व कहलाते है ।

# सर्वनाम

<u>परिभाषा–</u>
संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते है –
जैसे– मैं, तुम, वह, कौन, कोई, क्या आदि ।

सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ है– 'सबका नाम' अर्थात् जो शब्द सबके नामों के स्थान पर लडका/लडकी/कमरा आदि सभी संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त होते है, वे सर्वनाम कहलाते है ।
यह पुनरूक्ति दोषको मिटाने के लिए प्रयोग किया जाता है ।

सर्वनाम के भेद
सर्वनाम के निम्नलिखित 6 भेद है -

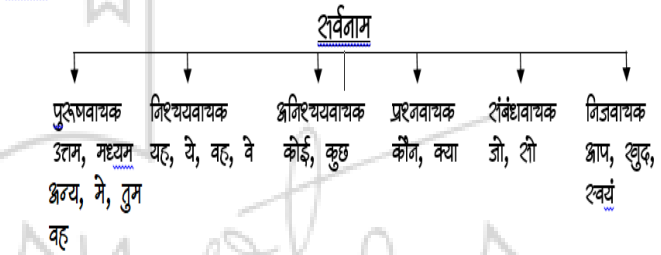


1. <u>पुरूषवाचक सर्वनाम **(Personal Pronoun)-**</u>
वक्ता, श्रोता या किसी अन्य के लिए जाने वाले कथन (पुरूष) हेतु जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, उन्हें पुरूषवाचक सर्वनाम कहते है । इसी आधार पर पुरूषवाचक सर्वनाम के तीन प्रकार माने गऐ है –

- <u>उत्तम पुरूषवाचक सर्वनाम (First Person)</u>– जिन सर्वनामों का प्रयोग बोलने वाला (वक्ता) या लिखनेवाला (लेखक) अपने लिए करता है, उन्हे उत्तम पुरूषवाचक सर्वनाम कहते है । मैं, मेरी, मेरा, मुझे, हम, हमारा, हमारी, हमको आदि उत्तम पुरूषवाचक सर्वनाम है, जैसे –
  - मैं अपने स्कूल गया ।
  - <u>हम</u> प्रदर्शनी देखने जाएँगे ।
  - इस विषय मे <u>हमारा</u> बोलना ठीक नही ।

- <u>मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम (Second Person)</u>– वक्ता या लेखक सुनने वाले (श्रोता) या पढनेवाले (पाठक) के लिए किए जाने वाले

कथन हेतु जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हे मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम कहते है । तू, तुम, तेरा, तेरी, तुम्हारा, तुझे, तुम्हें, आप, आपका, आपकी, अपना, अपनी, आपकों, अपने आदि मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम है । वाक्यों मे इनका प्रयोग निम्नलिखित प्रकार के देखा जा सकता है ।

1. तू बहुत अच्छा लिखती है । 2. तुम्हें गुरू जी ने बुलाया है ।
3. आप सबके लिए पूज्यनीय है । 4. पहले अपने देखो ।

अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम (Third Person)– जिन सर्वनामों का प्रयोग वक्ता या लेखक, वक्ता एवं श्रोता को छोडकर किसी अन्य के लिए किए जाने वाले कथन हेतु किया जाता है, उन्हें अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम कहते है । यह, वह, ये, वे उसका, उसकी, इसे, उसे, इन्हें, उन्हे, उनका, उनकी, उनको, उसको आदि अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम है जैसेः–

- वह रोते-रोते सो गई ।
- उसको बुलाकर समझाओं ।
- उन्हें अपनी गलती पर पछतावा है ।

## 2. निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)-

जिन सर्वनामों के द्वारा दूरवर्ती या समीपवर्ती व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं और निश्चित घटना व्यापार का बोध होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते है जैसे–

- यह कौन है ? यह तो श्याम है । (यहाँ 'यह' की ओर संकेत है, 'यह' पर जोर है ।)
- ये रहे वे जिन्हें मैं ढूँढ रहा था ।
- गीता का घर वह है ।
- वे जो बैठी है, अध्यापिकाऐं है ।

इन वाक्यों मे यह, वह, ये, वे, निश्चयवाचक सर्वनाम है तथा यह, ये समीपवर्ती तथा वह वे सर्वनाम दूरवर्ती संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त हुऐ है ।

## 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinate Pronoun)-

किसी अनिश्चत व्यक्ति, वस्तु, घटना, या व्यापार के लिए प्रयोग मे आने वाले सर्वनाम अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलातें है, जैसे– कोई किसी, कुछ । सजीव प्राणियों के लिए 'कोई', 'किसी' और निर्जीव पदार्थो के लिए 'कुछ' सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है जैसे–

- शायद बाहर कोई आया है (व्यक्ति)
- किसी (व्यक्ति) से कुछ (वस्तु) मत लो ।
- हमें कुछ तो खाना पडेगा । (वस्तु)

## 4. प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)-

किसी वस्तु, घटना या व्यापार के विषय मे प्रश्न का बोध कराने वाले शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते है । कौन, किसे, किसने, क्या आदि शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम है । इनमें भी कौन, किसे, किसने, किससे का प्रयोग व्यक्तियों के लिए और 'क्या, किसे, किससे' वस्तुओं के लिए प्रयुक्त होता है उदाहरणार्थ–

- कवियों को किसने आमंत्रित किया था ? (व्यक्ति)
- बाजार जाने के लिए किसे कहूँ ? (व्यक्ति)
- बाहर कौन आया है ? (व्यक्ति)
- आप चाय के साथ क्या लेंगे ? (वस्तु)
- तुम किससे लिखोगे ? (वस्तु)

## 5. संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)-

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग एक शब्द/वाक्यांश का दूसरे शब्द / वाक्यांश से संबंध प्रकट करने के लिए (जो–सो) किया जाता है या जो प्रधान उपवाक्य से आश्रित उपवाक्यों का संबंध जोडने का कार्य करते है, उन्हे संबंधवाचक सर्वनाम कहा जाता है । जो–सो, जिसे, वह, जो–वह, जैसा–वैसा, जिसको–उसको, जिससे–उससे आदि शब्द संबंधवाचक सर्वनाम है, जैसे–

- जैसी करनी वैसी भरनी ।
- जिसे देखो, वही अत्यधिक व्यस्त है ।
- जितनी लंबी चादर, उतने ही पैर पसारिऐं ।

## 6. निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)-

ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग कर्ता के लिए या कर्ता के साथ अपनत्व प्रकट करने के लिए किया जाता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते है । कुछ विद्वान निजवाचक सर्वनाम के वस्तुतः पुरूषवाचक सर्वनाम का ही एक भेद मानते है, और कुछ अलग । आप, अपने–आप, स्वयं, खुद स्वतः निज आदि निजवाचक सर्वनाम है यथा–

- मैं अपने–आप कार्यालय ढूँढ लूँगा ।
- उसने खुद/स्वयं/स्वतः ही परेशानी मोल ले ली है ।
- आप स्वयं चलकर निरीक्षण कर लीजिए ।

इस प्रकार उपर्युक्त वाक्यों मे प्रयुक्त अपने–आप, स्वयं, खुद निजवाचक सर्वनाम शब्दों का प्रयोग तीनो पुरूषों मे (उत्तम, अन्य, मध्यम) मे हो रहा है ।

# विशेषण

**परिभाषाः-**
विशेषण वह शब्द-भेद है, जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताता है । जैसे-

1. काली गाय अधिक दूध देती है ।
- योग्य व्यक्ति सदैव आदर के पात्र होते हैं ।
- कुछ लोग यहाँ आ रहे हैं ।
- दो बच्चे खेल रहे हैं ।

उपर्युक्त वाक्यो में 'काली' 'अधिक', 'योग्य' विशेषण क्रमशः गाय, दूध, व्यक्ति संज्ञाओं की विशेषता बताते है । इसी प्रकार 'कुछ' एवं 'दो' भी 'लोग' व 'बच्चों' (संज्ञाओं) के विशेषण है ।

**विशेषण और विशेष्य-** जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करते हैं, वे 'विशेषण' और जिन संज्ञाओं या सर्वनामों की विशेषता प्रकट की जाती है, वे शब्द 'विशेष्य' कहलाते है ।

**विशेषण के भेद :-** संज्ञा की विशेषता के प्रकार के आधार पर विशेषण के चार भेद माने गए है-

विशेषण के भेद
- गुणवाचक
- संख्यावाचक
- परिणामवाचक
- सार्वनामिक/संकेतवाचक

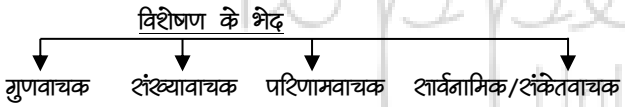

1. **गुणवाचक विशेषण :-** जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम (विशेष्य) के गुण-आकार, रंग, दशा, काल, स्थान आदि का बोध कराते है, उन्हे गुणवाचक विशेषण कहते है जैसे-

**गुण/दोषः-** अच्छा, बुरा, सरल, कुटिल, ईमानदार, सच्चा, बेईमान, झूठा, दानवीर, शिष्ट दयालु,कृपालु, कंजूस, शांत, चतुर, गुस्सैल आदि ।

**आकारः-** लंबा, छोटा, चौडा, चौकोर, तिकोना, गोल बडा, ठिगना, नाटा, ऊँचा, नीचा, अंडाकार,त्रिभुजाकार आदि ।

**रंगः-** काला, पीला, लाल, सफेद, नीला, गुलाबी, हरा, सुनहरा, चमकीला, आसमानी आदि ।

**स्वादः-** खट्टा, मीठा, कडवा, नमकीन, कसैला, तीखा आदि ।

**स्पर्शः-** कठोर, नरम, खुरदरा, कोमल, चिकना, गरम आदि ।

**गंधः-** सुगंधित, दुर्गंधपूर्ण, बदबूदार, खुशनुमा, सौंधा, गंधहीन ।

**दिशाः-** उत्तरी, पूर्वी, पश्चिमी, दक्षिणी, पाश्चात्य, भीतरी, बाहरी आदि ।

**दशाः-** नया, पुराना, जीर्ण-शीर्ण, पिलपिला, ढीला, स्वस्थ, रोगी, सूखा, गाढा, पतला, पिछ्ला, जमा आदि ।

**कालः-** प्राचीन, नवीन, आधुनिक, भावी, ऐतिहासिक, साप्ताहिक, मासिक, सुबह का भूला, नया, पुराना, ताजा आदि ।

**स्थानः-** ग्रामीण, भारतीय, रूसी, जापानी, बनारसी, देशी, विदेशी, बाहरी, तुर्की, वन्य, पहाडी, मैदानी, आदि ।

**अवस्थाः-** युवा, बूढा, तरूण, प्रौढ, अधेड, मुग्धा,धीर, गंभीर, अधीर, सहनशील आदि ।

**वाक्यो मे कुछ उदाहरण हैं-**

- अधिक गर्म दूध नही पीना चाहिए ।
- आम मीठा है ।
- संगमरमर चिकना पत्थर है ।
- आँखो की ज्योति के लिए हरा रंग अच्छा माना गया है ।

उपर्युक्त वाक्यों मे गर्म, मीठा, चिकना, हरा गुणवाचक विशेषण है जो क्रमशः दूध की अवस्था, आम के स्वाद, पत्थर का स्पर्शबोध और रंग के गुण को व्यक्त रहे है ।

2. **संख्यावाचक विशेषण :-** गणनीय संज्ञा या सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता का बोध करानेवाले शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते है । जैसे-

- कक्षा मे पचास लडके अध्ययन करते है ।
- माता जी ने एक दर्जन केले खरीदे है ।
- झगडे मे कई लोग मारे गए है ।

उपर्युक्त उदाहरणों मे पचास, एक दर्जन, कई संख्यावाचक विशेषण है जो कि क्रमशः लडके, केले, लोग संज्ञाओं की संख्यागत विशेषता का बोध कराते है । जातिवाचक या भाववाचक होता है ।

**संख्यावाचक विशेषण के भेद :-** संख्यावाचक विशेषण के विशेष्य की निश्चित और अनिश्चित संख्या के आधार पर दो भेद किए गए है ।

- निश्चित संख्यावाचक
- अनिश्चित संख्यावाचक

**(क) निश्चित संख्यावाचक :-** जहाँ विशेषण की निश्चित संख्या का बोध होता है ।

- कक्षा मे दस विद्यार्थी आए है ।
- दो दर्जन केले बीस रूपये के है ।

- आधा दरवाजा खुला हुआ है ।

इन वाक्यों मे आए हुये दस, दो दर्जन, आधा शब्द निश्चित संख्या का बोध कराते है ।
संख्यावाचक विशेषणों मे अपूर्णांक विशेषण- आधा, पौन, डेढ, एक चौथाई आदि तथा क्रमवाची विशेषण जैसे- पहला, दसवाँ आदि, गुणा/ आवृत्तिवाचक विशेषण, जैसे- दुगुना, चौगुना, समूहवाचक विशेषण, जैसे दोनो, चारो तथा प्रत्येकवाचक जैसे प्रति व्यक्ति, हर आदमी आदि होते है ।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण :- जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध न कराकर उनकी संख्या का अस्पष्ट अनुमान प्रस्तुत करते है, वे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते है, जैसे- कुछ, कई, थोडे, कम, बहुत, काफी, अगणित, दर्जियों, हजारो, अधिक, कोई-सौ, सौ-एक, करीब सौ, कोई दो सौ इत्यादि । वाक्यों मे कतिपय उदाहरण निम्नलिखित है-

- कुछ लडके मैदान मे खेल रहे है ।
- मेरे पास बहुत से रूपये है ।
- बस थोडे पन्ने लिखने बाकी है ।
- ट्रेन-दुर्घटना मे सैकडों व्यक्ति मारे गए ।
- सडक पर कोई-सौ लडके खडे थे ।

इन वाक्यों मे कुछ, बहुत-से, थोडे, सैकडों, कोई-सौ अनिश्चित संख्याओं का बोध कराते है ।

3. परिमाणवाचक :- मात्रात्मक, द्रव्यवाचक संज्ञा या सर्वनाम की माप-तौल संबंधी विशेषता को प्रकट करने वाले शब्दों को परिमाणवाचक विशेषण कहते है, जैसे-

- पहलवान प्रतिदिन पाँच लीटर दूध पी जाता है ।
- भिखारी को थोडा आटा दे दो ।

यहां 'पाँच लीटर दूध' 'थोडा आटा' व आटे का माप है जो गण्य नही है, केवल मापा जा सकता है, अतः वे परिमाणवाचक विशेषण है ।

परिमाणवाचक विशेषण माप-तौल की निश्चितता व अनिश्यितता के आधार पर दो प्रकार के माने गए है-
(क) निश्चित परिमाणवाचक- जो संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिमाण का बोध कराते है, उन्हे निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते है, यथा-

- चार लीटर दूध लेकर आओ ।
- बाजार से दस किलो चीनी ले आना ।
- यह चैन पंद्रह ग्राम सोने की है ।
- उसके पास बीस एकड जमीन है ।
- हमे दस ट्रक भूसा चाहिए ।

उपर्युक्त वाक्यों मे चार लीटर, दस किलो, पंद्रह ग्राम, बीस एकड, दस ट्रक क्रमशः दुध, चीनी, सोना, जमीन और भूसे के निश्चित माप है, इसलिए ये निश्चित परिमाणवाचक विशेषण है ।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक- जिन विशेषणों के द्वारा संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिणाम का बोध न होकर अनिश्चित परिमाण का बोध होता है, उन्हे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते है जैसे-

- वह ढेर सारा मक्खन खा गया । (अनिश्चित मक्खन)
- मुझे भी कुछ नाश्ता दे दो ।
- थोडा पानी देना ।
- जरा-सा आचार दे दो ।
- यहाँ ढेरों आम पडे है ।

उपर्युक्त उदाहरणों मे 'ढेर सारा', कुछ, थोडा, जरा-सा, ढेरों अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण है, जो क्रमशः मक्खन, नाश्ता, पानी, आचार, आम की अनिश्चित माप का बोध कराते है ।अधिक मात्रा का बोध कराने के लिए परिमाणवाचक विशेषण के साथ 'ओ' जोड दिया जाता है ।

4. सार्वनामिक विशेषण :- जो सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर आने के बजाय संज्ञा के पहले लगकर उसकी विशेषता बताते है, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते है ।

सार्वनामिक विशेषण के चार भेद :-

(क) निश्चयवाचक/संकेतवाचक सार्वनामिक विशेषण :- जिनसे संज्ञा या सर्वनाम निश्चययात्मकता का संकेत होता है, यथा

- उस व्यक्ति को बुलाइए । (व्यक्ति विशेष की ओर संकेत है)
- क्या यह पुस्तक तुम्हारी है ? (पुस्तक की ओर संकेत है)

(ख) अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण :- इनसे संज्ञा या सर्वनाम की अनिश्चयात्मकता का बोध होता है, जैसे:-

- वहाँ कुछ भी वस्तु खाने के लिए नही मिलेगी
- छत पर कोई व्यक्ति खडा है ।

(ग) प्रश्नवाचक सार्वनामिक विशेषण :- इन विशेषणों से संज्ञा या सर्वनाम से संबंधित प्रश्नों का बोध होता है जैसे :-

- वहाँ मैदान मे कौन छात्र दौड रहा है ?

- तुम्हारे लिए बाजार से <u>क्या</u> चीज लाऊँ ?
- तुम्हे <u>किस</u> लडके ने मारा है ?

उपर्युक्त उदाहरणों मे प्रयुक्त 'कौन' 'क्या' 'किस' आदि संज्ञा के पहले लगे हैं तथा विशेष्य से संबंधित प्रश्नों का बोध करा रहे हैं ।

(घ) <u>संबंधवाचक सार्वनामिक विशेषण</u> :- जिन विशेषणों से एक संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य मे प्रयुक्त अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्द के साथ जोडा जाता है जैसे:-

- जो घडी मैंने कल खरीदी थी, वह खो गई है ।
- जिस कार्य को करने से नुकसान होता है, उस पर विचार करना मूर्खता है ।
- वह व्यक्ति सामने जा रहा है, <u>जिससे</u> तुम्हारा झगडा हुआ था ।

इन उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट है कि <u>जो-वह</u>, <u>जिस-उस</u>, <u>वह-जिससे</u> सार्वनामिक विशेषणों का संबंध वाक्यों मे प्रयुक्त अन्य विशेष्यों- क्रमशः घडी, कार्य और व्यक्ति से स्थापित किया गया है ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

# क्रिया

वाक्य मे जिस शब्द-समूह से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते है, जैसेः-

- मोहन खाना खा रहा है ।
- हवा बह रही है । (करना-हवा बहने की क्रिया कर रही है ।)
- पुस्तक अलमारी मे है । (होना)

उपर्युक्त वाक्यों मे 'खा रहा है' 'बह रही है', 'है' क्रियापद है ।

<u>वाक्य मे कर्म की संभावना के आधार पर भेद :-</u>

*अकर्मक और सकर्मक क्रियाः-* किसी क्रिया के करने हेतु कर्म की आवश्यकता/संभावना होने या न होने के आधार पर क्रिया के मुख्यतः दो भेद है - सकर्मक और अकर्मक ।

(क) <u>अकर्मक क्रिया :-</u> जिस वाक्य मे क्रिया का फल कर्म पर न पडकर केवल कर्ता पर ही पडता है अर्थात जिस क्रिया के करने मे कर्म की आवश्यकता ही नही होती है, बिना किसी कर्म के क्रिया सम्पन्न हो सकती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते है, जैसेः-

- नरेश दौड रहा है ।
- चिडिया उड रही है ।
- बच्चा रोता है ।

उपर्युक्त वाक्यों मे 'दौड रहा है', 'उड रही है', 'रोता है' क्रियाओं के फल का प्रभाव क्रमशः नरेश, चिडिया और बच्चा कर्ता-पदों पर ही पडता है और ये क्रियाऐं बिना किसी कर्म के क्रिया केवल कर्ता के द्वारा ही सम्पन्न हो सकती है ।

(ख) <u>सकर्मक क्रिया :-</u> जहाँ क्रिया के घटित होने की प्रक्रिया मे कर्म की आवश्यकता होती ही है, उसे सकर्मक क्रिया कहते है । सकर्मक क्रिया कर्म के बिना सम्पन्न हो ही नही सकती, जैसे :-

1. राम पत्र लिखता है ।
2. 2. लडके ने बेर खाए ।
3. मोहित पानी पीता है ।
4. अध्यापक प्रश्न पूछते है ।

उपर्युक्त वाक्यों मे 'लिखना', 'खाना', 'पीना', 'पूछना' क्रियाओं का प्रभाव क्रमशः पत्र, बेर, पानी व प्रश्न पूछा जाता है और उसका कोई-न-कोई उत्तर अवश्य आता है और वह उत्तर ही कर्म होता है, और वह क्रिया सकर्मक होती है, राम क्या लिखता है ? (पत्र), लडके ने क्या खाए ? (बेर), मोहित ने क्या पिया ? (पानी) ।

<u>क्रिया की पूर्णता के आधार पर भेद :-</u>

<u>अपूर्ण क्रिया</u> - कुछ क्रियाओं का अपने-आपमें अर्थ पूर्ण ही नही होता, इसलिए अर्थ पूर्ण करने के लिए किसी अन्य 'पूरक' शब्द पर निर्भर होना होता है जो क्रिया न होकर संज्ञा या विशेषण पद होता है, ऐसी क्रियाओं को अपूर्ण क्रिया कहते है, अर्थात क्रिया अपना अर्थ स्वयं न देकर संज्ञा, विशेषण पद से ही दे पाती है, जैसे-

- अजीत श्याम को मूर्ख समझता है । ('मूर्ख'- विशेषण के बिना क्रिया 'समझता है' का अर्थ स्पष्ट नही होगा । )
- अशोक जी हमारे गुरू थे । (गुरू-संज्ञापद के बिना 'थे' का अर्थ स्पष्ट नही होता । )

स्पष्ट है कि इन वाक्यों मे प्रयुक्त पूरक (मूर्ख, गुरू-दोनो संज्ञापद) का लोप कर देने से वाक्य मे पूर्णता नही आती । ऐसे पूरक कर्मपूरक कहे जाते है, जो विशेषण और संज्ञा दोनो ही हो सकते है ।

<u>पूर्ण क्रिया -</u> जिस क्रिया-पद से क्रिया का अर्थ स्पष्ट हो जाए, पूरक के रूप मे गैर-क्रियापद (संज्ञा-विशेषण) की आवश्यकता नही हो, उसे पूर्ण क्रिया कहते है, जैसे :-

1. लडका सोता है । 2. लडका पढता है ।

यहाँ 'सोता है', 'पढता है' क्रियापद से पूर्ण अर्थ निकल जाता है । ये दोनो पद क्रियापद ही है । अतः ये पूर्ण क्रियाएँ है ।

<u>क्रिया की संरचना के आधार पर भेद :-</u>

<u>प्रेरणार्थक क्रिया -</u> जहाँ कर्ता खुद क्रिया को न करके दूसरे को क्रिया करने की प्रेरणा देता है वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है । यहाँ कर्ता भी क्रिया तो करता है किन्तु वह प्रेरणा देने की क्रिया करता है । प्रेरणार्थक क्रियाओं मे 'वा' लगता है ।

- नरेश ने नाई से बाल कटवाए ।
- सुनीता ने अर्चना से पत्र लिखवाया ।
- मोहन ने माली से दूब कटवाई ।

सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक होती है ।

मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया- मुख्य क्रिया के अर्थ को पूरा करने मे सहायता करने वाला क्रियापद सहायक क्रिया कहलाता है, जैसे -

- मैं गया हुआ था । (यहाँ गया मुख्य क्रिया है तथा हुआ था सहायक क्रिया है ।)
- सुरेश सुन रहा था । (सुन- मुख्य क्रिया है तथा रहा था- सहायक क्रियाएँ )

<u>नामधातु क्रियाः-</u> जब संज्ञा एवं विशेषण अर्थात् नामपद शब्दों के अंत मे प्रत्यय जोडने पर किसी क्रिया का निर्माण होता है, तब वह नामधातु क्रिया होती है जैसे :-

- सेठ ने मकान हथियाया । (हाथ–संज्ञापद)
- मुझ पर दृश्य फिल्माया । (फिल्म–संज्ञापद)
- लडकी बतियाई । (बात संज्ञापद)

<u>पूर्वकालिक क्रिया:–</u> जब कर्ता एक कार्य समाप्त कर उसी पल दूसरा कार्य आरम्भ करता है, तब पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है । पूर्वकालिक क्रिया के अंत मे कर लगता है– <u>सोकर, उठकर, जाकर</u> आदि ।

- बच्चे दूध पीकर सो गए । (सोने से पहले दूध पीया ।)
- रमेश खाना खाकर विद्यालय गया ।
- रमेश खाना खाने के बाद विद्यालय गया ।

लेकिन 'रमेश ने खाना खाया और उसके बाद विद्यालय गया' वाक्य मे पहली क्रिया पूर्वकालिक नही है, बल्कि दोनो ही क्रियाएँ स्वतंत्र क्रियाएँ है क्योकि दोनो क्रियाएँ दो अलग–अलग उपवाक्यों की क्रियाएँ है ।

<u>तात्कालिक क्रिया:–</u> यह क्रिया भी मुख्य क्रिया से पहले सम्पन्न हो जाती है । इसमें और मुख्य क्रिया मे समय का अंतर नही होता, किन्तु पहली क्रिया के घटने के तत्काल बाद दूसरी क्रिया के घटने का बोध होता है जो 'ही' निपात से संभव होता है ।

- वह खाना खाते ही (तात्कालिक क्रिया) सो गया ।
- वह नहाते ही (तात्कालिक क्रिया) मंदिर चला गया ।

<u>संयुक्त क्रिया:–</u> जब दो या दो से अधिक क्रिया–धातुओं के योग क्रियापद बनता है तो उसे संयुक्त क्रिया कहते है । संयुक्त क्रिया मे कई क्रियाओं के संयुक्त हो जाने से एक क्रिया का अर्थ निकलता है, जैसे :–

- वह खाना खा चुका होगा ।
- दीक्षा लिखा करती होगी ।
- पानी बरसने लगा है ।
- मै यहाँ रोज आ जाया करता हूँ ।
- दोपहर मे लोग सो रहे होते है ।

इन सभी वाक्यों मे पहला क्रियापद मुख्य क्रिया है तथा बाद के सभी क्रियापद सहायक क्रियाएँ है और मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रियाओं को मिलकर बने क्रियापद–समूह संयुक्त क्रियाएँ है । सहायक क्रिया एक भी हो सकती है । (पढता है) और एक से अधिक भी जैसा कि ऊपर के वाक्यों मे है ।

## काल

प्राय: लोग काल और समय को एक ही मान लेते है परन्तु ये एक नही है । समय एक भौतिक इकाई (भौतिक सत्य) है तथा काल एक व्याकणिक (भाषिक) अवधारणा है । किसी क्रिया के घटित होने के समय के प्रति वक्ता का जो मानसिक बोध वाक्य मे व्यक्त होता है, वही वैयाकरणिक काल है ।

चूंकि 'समय' को भूत, वर्तमान तथा भविष्य तीन वर्गो मे बांटा जाता है, उसी के आधार पर काल को भी परंपरागत व्याकरण मे वर्तमानकाल, भूतकाल तथा भविष्यकाल तीन वर्गो मे बांट लिया जाता है ।

1. <u>वर्तमान काल (Present Tense)</u> :– कथन के क्षण के साथ–साथ क्रिया का होना अर्थात् वर्तमान काल के अंतर्गत आता है, जैसे–
   - वह किताबें बेचता है ।
   - आप क्या करते है ?
   - मैं खाना खा रही हूँ
2. <u>भूतकाल (Past Tense)</u> :– कथन के क्षण के पूर्व क्रिया व्यापार का होना अर्थात् बीते हुए समय मे होना भूतकाल है, जैसे:–
   - मैंने चाय पी ली है ।
   - मै आगरा गया था ।
   - बच्चा चला गया ।
   - वे पत्र लिख रहे थे ।
3. <u>भविष्य काल (Future Tense)</u> :– कथन के क्षण के बाद क्रिया का होना अर्थात् भविष्य मे होना भविष्य काल जैसे :–
   - वह कल दिल्ली जा रहा है । (क्रिया वर्तमान काल– जैसी किन्तु है भविष्य काल)
   - मैं काम नही करूँगा ।
   - कल हम इस समय परीक्षा दे रहे होंगे ।

### <u>वर्तमान काल के भेद</u>

<u>वर्तमान काल के तीन भेद माने गए है–</u>

1. <u>सामान्य वर्तमान (Present Indefinite)</u> – जिस क्रिया से वर्तमान काल मे क्रिया का होना या करना पाया जाता है, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते है, जैसे –
   - लडका जाता है ।
   - लडके जाते है ।

- लडका रोज जल्दी उठता है ।

सामान्य वर्तमान मे आदत होने का संकेत तथा हमेशा होने वाली / घटनाएँ अवधारणाएँ भी सम्मलित रहती है, जैसे :-

- यह लडका हमारे घर आता रहता है ।
- दो और दो हमेशा चार होते है ।
- ग्रीष्म ऋतु के बाद वर्षा ऋतु आती है ।

2. <u>अपूर्ण वर्तमान (Imperfect)</u> :- क्रिया के जिस रूप ये यह पता चले कि कार्य वर्तमान काल मे शुरू हो गया है लेकिन अभी तक पूरा नही हुआ है तथा अभी भी जारी है, उसे अपूर्ण वर्तमान कहते है । इसे सातत्य वर्तमान (Present Continuous) भी कहा जा सकता है, जैसे :-
   - लडका खेल रहा है ।
   - शिक्षाक पढा रहे है ।

3. <u>संदिग्ध वर्तमान</u> - क्रिया के जिस रूप द्वारा काम के वर्तमान काल मे होने या करने मे अनिश्चय का बोध हो उसे संदिग्ध वर्तमान के नाम से जाना जाता है, जैसे :-
   - लडके बाजार से आते होंगे ।
   - पिता ली दफ्तर पहुंचते होंगे ।

संदिग्ध वर्तमान मे मुख्य क्रिया वर्तमान काल ही रहती है - आता/पहुंचता/पढता/चलता तथा सहायक क्रिया के रूप मे होगा/होंगे/होगी रहती है ।

## <u>भूतकाल के भेद</u>

भूतकाल के निम्नलिखित 6 भेद है -

1. <u>सामान्य भूत (Simple Past या Past Indefinite)-</u> जिस काल से भूतकाल मे क्रिया के सामान्य रूप से समाप्त हो जाने का संकेत मिलता है, उसे सामान्य भूत कहते है जैसे :-
   - लडका <u>आया</u> ।
   - लडकी ने खाना <u>खाया</u> ।

2. <u>आसन्न भूत</u> - क्रिया के जिस रूप से क्रिया के अभी-अभी समाप्त होने का बोध हो, उसे आसन्न भूतकाल कहते है । 'आसन्न' का अर्थ है- निकट । आसन्न भूत के यह बोध होता है कि कार्य अभी-अभी, निकट भूत मे ही पूर्ण हुआ है, जैसे -
   - वह <u>अभी-अभी</u> आया है ।
   - उसने <u>हाल</u> मे चाय पी है ।

3. <u>पूर्ण भूत (Past Imperfect)-</u> भूतकाल की जिस क्रिया से यह सूचित होता है कि कोई कार्य भूतकाल मे बहुत पहले समाप्त हो चुका था, वह पूर्ण भूत कहलाता है, जैसे -
   - लडका खाना खा चुका था ।
   - लडकी कल दिल्ली गई थी ।
   - मेरे उठने से पहले सूरज उग चुका था ।

4. <u>अपूर्ण भूत (Past Imperfect या Incomplete Past)-</u> भूतकाल की जिस क्रिया से यह विदित हो कि कार्य भूतकाल से प्रारम्भ हो चुका था, चल रहा था, किन्तु काम पूरा नही हुआ था, जारी था, उसे अपूर्ण भूत कहते है, जैसे -
   - लडका पढ रहा था ।
   - माँ खाना बना रही थी ।

5. <u>संदिग्ध भूत</u> - भूतकाल की जिस क्रिया के करने अथवा होने पर अनिश्चियतता (अर्थात निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता कि कार्य हुआ था क्या । ) प्रतीत हो, वह <u>संदिग्ध भूत</u> कहलाता है, जैसे -
   - लडकी ने कविता पढी होगी ।
   - लडके ने गीत गाया होगा ।

संदिग्ध वर्तमान और संदिग्ध भूतकाल दोनो मे होगा/होगी/होंगे/होंगी सहायक क्रियाएँ तो समान रहती है किन्तु संदिग्ध वर्तमान मे मुख्य क्रिया वर्तमानकाल की (पढता/चलता) होती है तथा संदिग्ध भूतकाल मे भूतकाल की (पढा/चला) रहती है ।

6. <u>हेतु-हेतुमद् भूत (Conditional Past)-</u> जिस क्रिया से यह जाना जा सके कि कार्य भूतकाल मे हो सकता था, परन्तु किसी अन्य कार्य के हो सकते या न हो सकने के कारण (हेतु) से हो सका या न हो सका, वहाँ हेतु-हेतुमद् भूत होता है, जैसे-
   - कपिल पढता तो उत्तीर्ण हो जाता ।
   - कपिल पढा इसलिए उत्तीर्ण हो गया ।
   - यदि वर्षा होती तो फसल हो जाती ।

## <u>भविष्य काल के भेद</u>

भविष्य काल के तीन भेद माने गए है -

1. <u>सामान्य भविष्य (Future Indefinite या Simple Future)</u> भविष्य काल की जिस क्रिया से यह सूचित हो कि क्रिया भविष्य मे एक या अनेक बार होगी, उसे समान्य भविष्य कहते है, जैसे -
   - माली पौधों मे पानी देगा ।

- हम सब खेलने जाएँगे ।
- हम आज शाम आपके यहाँ आ रहे है । (क्रिया वर्तमान जैसी किन्तु भविष्य काल)

2. <u>संभाव्य भविष्य (Doubtful Future) -</u> क्रिया के जिस रूप से भविष्य काल मे कार्य के होने की संभावना पाई जाए, वह संभाव्य भविष्य कहलाता है, जैसे –
   - वह शायद कल सवेरे आ जाए ।
   - हो सकता है, मेहमान कल ही आ जाएँ ।

संभाव्य भविष्य की क्रियाओं से कार्य के होने का निश्चित पता नही चलता, केवल उसकी संभावना का बोध होता है, जिसे 'संभव है' 'हो सकता है' आदि पदों से व्यक्त किया जाता है ।

3. <u>सातत्यबोधक भविष्य (Future Continuous)</u> जिस क्रिया– रूप से भविष्य मे कार्य के जारी रहने का/निरंतरता का बोध हो, उसे सातत्यबोधक भविष्य कहते है, जैसे –
   - कल हम इस समय परीक्षा दे रहे होंगे ।
   - हमारे पहुंचने के समय पुनीत पढ रहा होगा ।

# विराम चिह्न और उनके प्रयोग

'विराम' का अर्थ है- विश्राम अथवा ठहराव । भाषा द्वारा जब हम अपने भावों को प्रकट करते हैं तब एक विचार या उसके कुछ अंश को प्रकट करने के पश्चात् हम थोडा रुकते हैं, इसे ही 'विराम' कहते है और इसे स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें ही 'विराम-चिह्न' कहते हैं ।

विराम-चिह्नों के गलत प्रयोग से अर्थ का अनर्थ हो जाता है यानी अर्थ बदल जाता है । नीचे लिखे वाक्यों को देखें:

रोको, मत जाने दो । (रोक लो, वह जाने न पाए)

रोको मत, जाने दो । (छोड दो, मत रोको)

हिन्दी भाषा में निम्नलिखित प्रकार के चिह्नों का प्रयोग किया जाता है । इन चिह्नों को दो भागों में बाँटा जा रहा है-विराम-चिह्न और मनोभाव या भाव-चिह्न ।

1. विराम-चिह्न

(क) पूर्ण विराम (Full stop)- । या .

यह चिह्न एक अभिप्राय की समाप्ति को सूचित करता है । अतएव, प्रत्येक वाक्य की समाप्ति पर इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है ।

जैसे- हमें पर्यावरण को नष्ट होने से बचाना चाहिए । पेड-पौधे प्रकृति में संतुलन बनाए रखते हैं ।

(ख) अपूर्ण विराम या उपविराम (Colon)- :

जहाँ एक वाक्य के समाप्त हो जाने पर भी विवक्षित भाव समाप्त नहीं होता, आगे की जिज्ञासा बनी रहती है, वहाँ पूर्ण विराम से कम देर तक ठहरते हुए आगे तब तक बढते जाते हैं, जब तक वक्तव्य पूरा नहीं होता । उस जगह पर अपूर्ण विराम का प्रयोग देखा जाता है ।

जैसे- शब्द और अर्थ के बीच तीन में से कोई संबंध हो सकता है : अभिधा, लक्षणा, व्यंजना ।

(ग) अर्धम विराम (Semicolon)- ;

जहाँ अपूर्ण विराम से भी कम ठहराव का संकेत होता है, वहाँ इस तरह के चिह्न का प्रयोग होता है । जैसे-

हमने देखा है कि जिन्दगी का रास्ता कितना लम्बा और कठिन है; यह देखा है कि हर कदम पर कठिनाई कम होने के बजाय और बढती ही जाती है । यह भी देखा है कि किस तरह लोग अपने जीवन की वर्तमान परिस्थितियों से ऊबकर मौत तक को गले लगा लेते हैं ।

यदि खंडवाक्य का आरंभ वरन्, पर, परन्तु, किन्तु, क्योंकि, इसलिए, तो भी आदि शब्दों से हो तो उसके पहले इसका प्रयोग करना चाहिए । जैसे-

आरा, छपरा और बाँकीपुर के लोगों की आँखें डबडबाई हुई हैं; क्योंकि अभी-अभी पता चला है कि वीर कुँवर सिंह परलोक सिधार गए ।

लगातार आनेवाले पदबंधों के बीच भी अर्द्ध-विराम का प्रयोग किया जाता है । जैसे-

सुबह के शीतल, मंद, सुगंधित समीरन के झोंकों से कलियाँ खिलखिला उठती हैं; वृक्षों की छोटी-बडी टहनियाँ झूम उठती हैं; रात की नींद का आनंद लेकर जीव-जगत पूर्वदिन का क्लेश कौन भूल जाता है; पक्षियों के सुमधुर कलरव से वातावरण गुंजायमान हो जाता है और धीरे-धीरे बाल अरुण अंधकार रूपी राक्षस को लील जाता है ।

(घ) अल्प विराम (Comma)- ,

अल्पविराम का क्षेत्र बडा व्यापक होता है । इसमें बहुत कम ठहराव होता है । इस चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थानों पर होता है-

(a) जहाँ एक प्रकार के अनेक शब्द या शब्द समूह आये और योजक (और, तथा, एवं व आदि) का प्रयोग केवल अंतिम दो के बीच आये, वहाँ शेष दो के बीच अल्पविराम आता है ।

जैसे-राजा दशरथ के चार लडके थे- राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न । (दो संज्ञाओं के बीच)

चारों भाई सुन्दर, सुशील, नम्र, दयालु और सबल थे । (दो विशेषणों के बीच)

चारो साथ-साथ खेलते, खाते, पढते और टहलते थे । (दो क्रियाओं के बीच)

(b) जहाँ योजक छोड दिया जाता है । जैसे-सोनी बहुत खुश हुई, वह माँ बननेवाली थी न । विध्वंस एक दिन में हो सकता है, निर्माण नहीं ।

(c) दो बडे वाक्यांशों के बीच । जैसे-

परन्तु उनके कष्ट सहन से, उन कष्टों को मानव-कल्याण के प्रयत्नों में ढालने की उनकी शक्ति से आधुनिक युग को अजस्त्र जीवन-प्रेरणा मिली है ।

(d) हाँ, नहीं, जी, बस, अतः अतएव, निष्कर्षत; अच्छा आदि से शुरू होनेवाले में इन शब्दों के बाद । जैसे-

जी हाँ, मैंने बार-बार सावधान किया था उसे । अच्छा, अवश्य जाऊँगा ।

(e) संबोधित संज्ञा के बाद- प्रखर, जरा इधर तो आइए ।

(f) दी गई संज्ञा के विषय में विशेष सूचना के रूप में आनेवाली संज्ञा या सर्वनाम के पहले और बाद में । जैसे-

रावण, लंका का राजा, बडा ही विद्वान था । बगदाद, इराक की राजधानी, बहुत ही सुन्दर महानगर है ।